

इण्डियन थिऑसफिस्ट

जुलाई 2026	खण्ड 124	अंक 7
विषयवस्तु		
एक कदम आगे प्रदीप एच. गोहिल	5—8	
भ्रम दूर करना, सच्चाई की ओर रास्ता बनाता है एन.सी. कृष्णा	9—12	
प्यार और करुणा कैसे जीवन की एकात्मता को समझने में मदद करते हैं सागी श्री हरि वर्मा	13—17	
थियोसोफी का आह्वान दीपक पांड्या	18—22	
समाचार और टिप्पणियाँ	23—34	

सम्पादक
अनुवादक

प्रदीप एच गोहिल
शिवबरन सिंह

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवन में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म-विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

एक कदम आगे

यद्यपि मानसिक शांति और आंतरिक जागरूकता ध्यान के जरूरी हिस्से हैं, फिर भी शरीर—खासकर, बैठने के तरीके की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। शारीरिक मुद्रा (Posture) /आसन सिर्फ शरीर की एक स्थिति नहीं है, बल्कि वह आधार है जो पूरे ध्यान के अनुभव को सहारा देता है। सही शारीरिक मुद्रा शरीर को सही स्थिति में लाने, मन को शांत करने और एकाग्रता को गहरा करने में मदद करता है, जिससे ध्यान ज्यादा असरदार और संतोषजनक बनता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आसन का सीधा असर ध्यान के दौरान आपके शरीर में जरूरी ऊर्जा के प्रवाह पर पड़ता है।

सही शारीरिक मुद्रा शारीरिक स्थिरता सुनिश्चित करती है। जब शरीर सही स्थिति में होता है—चाहे जमीन पर घटाई बिछाकर पालथी मारकर बैठें या कुर्सी पर सीधे बैठें—तो इससे संतुलन और स्थिरता का एहसास होता है। यह स्थिरता बेवजह की हलचल और ध्यान भटकाने वाली चीजों को कम करती है। अगर कोई झुककर या असहज स्थिति में बैठता है, तो शरीर जल्द ही दर्द या बेचैनी के जरिए ध्यान खींचता है, जिससे ध्यान की प्रक्रिया में रुकावट आती है। एक संतुलित आसन, जिसमें रीढ़ की हड्डी सीधी लेकिन तनाव—मुक्त हो, व्यक्ति को बिना किसी तनाव के लंबे समय तक स्थिर रहने में मदद करता है।

दूसरे, सही शारीरिक स्थिति श्वास लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ध्यान में, श्वास जागरूकता अक्सर केंद्रीय होती है। एक सीधा आसन छाती को खोलता है और फेफड़ों को पूरी तरह से फैलने देता है, जिससे गहरी और स्वाभाविक श्वास लेने में आसानी होती है। गोल कंधों, झुकी हुई पीठ और थोड़ा आगे झुके हुए सिर वाली अजीब, आलसी और झुकी हुई मुद्रा में बैठने से डायफ्राम दब जाता है और वायु प्रवाह प्रतिबंधित हो जाता है। इससे उथली श्वास आती है, जो मानसिक शांति को भंग कर सकती है। इसलिए, उचित आसन एक सहज, लयबद्ध सांस लेने से आराम और ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। शरीर में ऊर्जा के बहाव पर भी मुद्रा का असर पड़ता है। सीधी रीढ़ की हड्डी से जरूरी ऊर्जा आसानी से बह पाती है। जब शरीर सही मुद्रा में होता है, तो ऊर्जा आसानी से घूमती है, जिससे ध्यान की गहराई और गुणवत्ता बढ़ती है। इसके अलावा, एक ही मुद्रा बनाए रखने से ध्यान के साथ एक

मानसिक जुड़ाव बन जाता है। समय के साथ, बस एक खास मुद्रा में बैठने से ही मन को ध्यान की अवस्था में जाने का संकेत मिल सकता है। इस आदत की वजह से व्यस्त या ध्यान भटकाने वाले माहौल में भी जल्दी ध्यान केंद्रित करना और शांत होना आसान हो जाता है।

शरीर की मुद्रा और सतर्कता के बीच भी संबंध होता है। ध्यान का अर्थ है शांत मन से जागरूक रहना। इसका संबंध नींद या सुस्ती से नहीं है। सिर, गर्दन और रीढ़ की हड्डी को सीधा रखकर बैठने से मस्तिष्क को जागृत और सतर्क रहने का सूक्ष्म संकेत मिलता है। इसके विपरीत, झुकी हुई मुद्रा अक्सर उनींदापन या एकाग्रता की कमी का कारण बनती है। इस प्रकार, शरीर की मुद्रा आराम और सतर्कता के बीच उस नाजुक संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है जो प्रभावी ध्यान के लिए आवश्यक है।

सही 'शारीरिक मुद्रा (Posture) का मतलब है शरीर का पूरी तरह स्थिर होना। क्रिकेट में तेज गेंदबाज का सामना करने के लिए खड़े बल्लेबाज, या तीरंदाज या शतरंज के खिलाड़ी के बारे में सोचिए — वे अपने काम के दौरान कितने स्थिर होते हैं। शरीर की स्थिरता मन को शांत करती है, जिससे आपको शारीरिक रूप से और भी स्थिर रहने में मदद मिलती है। जब आप ध्यान करने के लिए बैठें, भले ही सिर्फ पंद्रह मिनट के लिए, तो कोशिश करें कि किसी चट्टान या बेजान लकड़ी के टुकड़े की तरह स्थिर बैठें। इससे आपके शरीर की ऊर्जा स्थिर हो पाएगी। शांति अपने—आप आपको घेरने लगेगी। अगर ध्यान करने वाले का शारीरिक मुद्रा (Posture) सही हो, तो ध्यान का अनुभव ज्यादा आनंददायक होगा और इसके फायदे भी जल्दी मिलेंगे।

यहाँ एक जरूरी बात याद रखनी चाहिए कि एक ही मुद्रा में स्थिर बैठने की आपकी क्षमता धीरे—धीरे बढ़ती है। अगर आज कोई 20 मिनट तक स्थिर बैठ सकता है, तो 40 मिनट तक पहुँचने में एक साल की सच्ची प्रैक्टिस लग सकती है। ज्यादातर ध्यान करने वाले लोग, कोशिश और पक्के इरादे से, 45 मिनट तक स्थिर बैठ सकते हैं। सबसे मुश्किल पड़ाव 45 मिनट से 90 मिनट तक का समय होता है। इसमें एक और साल लग सकता है। भले ही आप ध्यान न करें, लेकिन सिर्फ स्थिर बैठना सीख लें, तो भी आपको इससे बहुत फायदा होगा। स्थिर बैठने के लिए, अच्छी मुद्रा के आठ मुख्य तत्व होते हैं:

1. पैरों को क्रॉस करके रखें। अगर आपको कोई ऐसी मेडिकल समस्या है जिसकी वजह से आप पैर क्रॉस करके नहीं बैठ सकते, तो आप कुर्सी पर बैठ सकते हैं। कम से कम अपने पैरों को क्रॉस करके रखें, उन्हें फैलाकर न बैठें। हाथों और पैरों को आपस में जोड़कर रखना जरूरी है ताकि आपके शरीर में एनर्जी का पूरा सर्कुलेशन और बहाव हो सके।

2. पीठ को सीधा रखें। एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं, तो आप कई विकसित (Advanced) योगिक अभ्यास करने के लिए तैयार हो जाते हैं। अगर आप इस रास्ते पर आगे बढ़ने को लेकर गम्भीर हैं, तो पीठ का सीधा होना बहुत जरूरी है।

3. हाथों को जोड़कर रखें। आपके हाथ एक-दूसरे के ऊपर क्रॉस हो सकते हैं या एक हाथ दूसरे के ऊपर रखा हो सकता है। बाएं हाथ पर दायां हाथ रखने से शरीर ठंडा रहता है, बाएं दिमाग पर असर पड़ता है और आपकी मर्दाना एनर्जी बढ़ती है। सही तरीका यह है कि आपके अंगूठे के सिरे एक-दूसरे से जुड़े हों।

4. बाहों को आराम से रखें, उन्हें खींचकर न रखें। आपकी कोहनियों का प्राकृतिक आकार थोड़ा मुड़ा हुआ होता है, इसलिए उन्हें वैसा ही रहने दें।

5. सिर को सीधा रखें। आपकी गर्दन और सिर एक सीधी रेखा में होने चाहिए। याद रखें, आपकी गर्दन पर खिंचाव नहीं आना चाहिए क्योंकि इसमें एक सामान्य हल्का सा घुमाव होता है जिसे बनाए रखना जरूरी है। असल में, शरीर के सभी हिस्से स्थिर लेकिन तनाव-मुक्त होने चाहिए।

6. अपनी नजर को स्थिर रखें। यह एक सच्चे योगी की पक्की पहचान है। अभ्यास और अनुभव के साथ आपकी नजर और भी स्थिर होती जाएगी। आँखों की पुतलियों की हलचल को रोकना, स्थिर मुद्रा में निपुणता हासिल करने की आखिरी चुनौतियों में से एक है।

7. चेहरे पर हल्की मुस्कान रखें। चेहरे की मांसपेशियों को ढीला छोड़ दें और अपनी नजर को नीचे करते हुए और आँखों को आधा बंद रखते हुए हल्की मुस्कान बनाए रखें।

8. आपकी जीभ तालू के अगले हिस्से को छूती हुई होनी चाहिए। यह जरूरी है क्योंकि लार बनने से आपको बार-बार निगलना पड़ सकता है,

जिससे शरीर का एहसास (body consciousne) बढ़ जाता है। अगर आपकी जीभ तालू को छूती है, तो लार अपने आप नीचे की ओर बहती रहती है। दाँत थोड़े अलग और होंठ हल्के से जुड़े हुए होने चाहिए।

निष्कर्ष के तौर पर, सही शारीरिक मुद्रा (Posture) ध्यान का एक बुनियादी पहलू है। इसका मतलब है ऐसी स्थिति खोजना जो स्थिर, आरामदायक और सही सीध में हो। मुद्रा पर ध्यान देकर, कोई भी ध्यान की गुणवत्ता को बेहतर बना सकता है और आंतरिक शांति और जागरूकता की स्थिति के करीब पहुँच सकता है। जब ऐसा होता है, तो यह जीवन में एक कदम आगे बढ़ने जैसा होता है।

भ्रम को दूर करना, सच्चाई की ओर रास्ता बनाता है”

ऊपर दिए गए वाक्य में दो मुख्य शब्द हैं। भ्रम और सच्चाई। हम इन शब्दों के शाब्दिक अर्थ पर विचार नहीं करने जा रहे हैं।

भ्रम क्या है? थियोसोफी (ब्रह्मविद्या) के नजरिए से सच्चाई क्या है? भ्रम कोई ऐसी चीज नहीं है जो झूठी हो। यह कोई मनगढ़ंत स्थिति या असली चीज जैसी दिखने वाली चीज नहीं है।

भ्रम तब पैदा होता है, जब कोई किसी अस्थायी चीज को स्थायी मान लेता है। यह भ्रम है जब कोई ऐसे रूप को पकड़ कर रखता है जो बदलता है, नष्ट होता है, और यह मान लेता है कि वह रूप स्थायी है, और उसमें कोई बदलाव नहीं होता। यह भ्रम है, जब कोई किसी हिस्से को देखता है, और उसे ही पूरी चीज मान लेता है। एच.पी.बी. की ‘द सीक्रेट डॉक्ट्रिन’ में, हमें यह शब्द मिलता है ‘माया’, जो भ्रम¹ के लिए एक संस्कृत शब्द है।

हमारे पास आदि शंकराचार्य का दिया हुआ एक उत्कृष्ट उदाहरण है — भ्रम को समझाने के लिए रस्सी और साँप का उदाहरण। (अद्वैत वेदांत, विवेक चूड़ामणि)

थियोसोफी कहती है कि हम जो ब्रह्मांड देखते हैं, वह पूरी तरह से असली नहीं है, बल्कि सापेक्ष रूप से असली है। ब्रह्मांड जैसा दिखता है, वह भ्रामक और असली नहीं है, क्योंकि:

अ) ब्रह्मांड में हर चीज बदलाव के अधीन है।

ब) बदलाव ही एकमात्र ऐसी चीज है जो स्थिर है।

स) ब्रह्मांड दैवीय योजना के अनुसार अस्तित्व में आता है और प्रलय के समय गायब हो जाता है।

द) हम ब्रह्मांड को समझते और अनुभव करते हैं...

हमारी इंद्रियाँ इसे ही संवेदी बोध (sensory perception) कहा जाता है।

* TS के इंटरनेशनल स्पीकर और इंडियन सेक्शन, TS के नेशनल लेक्चरर।

** अड्यार में आयोजित साउथ इंडिया कॉन्फ्रेंस के दौरान दी गई ऑनलाइन टॉक।

वास्तव में, यह निम्न मन ही है जो ब्रह्मांड को महसूस करता है, उसकी व्याख्या करता है और उसे समझता है। निम्न मन चीजों की इच्छा करता है और उन्हें पाने की कोशिश करता है। इंसान चीजों को जानता है, और उन्हें पाने से मिलने वाली तथाकथित खुशी असली खुशी या अनुभव नहीं होती। लेकिन चूँकि इंसान भौतिक चीजों में उलझा रहता है, इसलिए वह बार—बार वही करता रहता है और ऐसी चीजों के पीछे भागता रहता है जो स्वभाव से क्षणभंगुर (अस्थायी) होती हैं।

इंसान को एक और भ्रम होता है। वह खुद को अपने शरीर से जोड़कर देखता है और कहता है कि शरीर ही ‘असली मैं’ है। इंसान को एक और भ्रम होता है। उसे लगता है कि वह दूसरों से अलग है। यह अलगाव और विशिष्टता का भाव जो उसे महसूस होता है, असल में एक भ्रम ही है।

इंसान अपनी संपत्ति, अपने सामाजिक प्रतिष्ठा, अपनी दौलत और अपने रिश्तों को महत्त्व देता है। वह जिंदगी भर इनकी चाहत रखता है और इन्हें पाने की कोशिश करता है। ये सब भ्रम हैं, क्योंकि ये सब कुछ समय के लिए ही होते हैं। ऐसे और भी कई भ्रम हैं। इंसान इन भ्रमों से कैसे बाहर निकले और असलियत को कैसे जाने?

थियोसोफी सिखाती है कि जो भी चीजें सीमित हैं, जो समय से बंधी हैं, और जो चीजें शाश्वत और स्थायी नहीं हैं, उन्हें अपनी समझ—बूझ (विवेक) से समझने की जरूरत है। थियोसोफी हमें सिखाती है कि ‘माया’ या भ्रम एक ऐसा तत्व है जो सीमित चीजों में समाया होता है, इसीलिए कहा जाता है कि ब्रह्मांड में मौजूद हर चीज केवल सापेक्ष रूप से वास्तविक है — पूरी तरह से वास्तविक नहीं। उस सर्व—समावेशी परम सिद्धांत के अलावा कुछ भी वास्तविक नहीं है जो शाश्वत रूप से मौजूद है। हम जो कुछ भी देखते हैं, उसमें से कुछ भी स्थायी नहीं है, सिवाय उस एक सिद्धांत के जो सभी अस्तित्व का मूल कारण है।

इसलिए यह देखने वाले या इंसान का काम है कि वह अपनी समझ—बूझ का इस्तेमाल करके यह पहचाने कि क्या वास्तविक है, और क्या वास्तविक नहीं है या केवल सापेक्ष रूप से वास्तविक है।

जो कुछ भी रचा या प्रकट किया गया है, और सभी जीव—जंतु, विकास—क्रम का हिस्सा हैं। मनुष्य भी विकसित होता है और...बार—बार जन्म

लेकर पूर्णता प्राप्त करना, विकसित होना और मुक्ति पाना।

सच्चाई क्या है?

थियोसोफी के अनुसार, सच्चाई वह है जो शाश्वत है। वह शाश्वत सार्वभौमिक आत्मा, सर्वशक्तिमान या परब्रह्म ही एकमात्र परम सत्य है। वह सिद्धांत, जो शाश्वत है, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है। वह सिद्धांत एक अपरिवर्तनीय सिद्धांत है, और साथ ही असीम भी है²।

एच.पी.बी. ने अपनी किताब 'द वॉयस ऑफ द साइलेंस' में कहा है कि मन ही सत्य का हन्ता/महान संहारक है। (The mind is the great slayer of the real) नाश करने वाले को (Slay the slayer)³ "नाश कर डालो"।

एच.पी.बी का कहना है कि यह मन ही है जो हमें असलियत को देखने नहीं देता। जब इंसान उस 'नाश करने वाले' — यानी निचले मन — का नाश कर देता है, तभी हम असलियत के द्वार तक पहुँच सकते हैं। उस किताब ('द वॉयस ऑफ द साइलेंस') में असलियत को समझने के लिए कई संकेत दिए गए हैं।

वास्तविकता को देखने के लिए, इंसान को अपना भौतिक नजरिया छोड़ना होगा और शरीर के प्रति चेतना (Body Consciousness) से ऊपर उठकर आगे बढ़ना होगा।

यह प्रकट ब्रह्मांड 'परम सत्ता' की सोच का नतीजा है। जो अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं, वे उसी योजना का हिस्सा हैं। ब्रह्मांड के सभी जीव विकसित होते हैं और पूर्णता की ओर बढ़ते हैं।

भ्रम को कैसे खत्म करें और सच्चाई को कैसे अपनाएं? सच्चाई या सत्य, शाश्वत और प्राचीन है, और यह ईश्वरीय नियम है।

इंसान को लगातार मेहनत करनी होती है, प्रयास करना होता है और उस रास्ते पर चलना होता है, जिसे उसे खुद ही बनाना चाहिए। यह पहाड़ पर चढ़ने जैसा है। पहाड़ पर चढ़ना एक तरह से सच्चाई को पाने की यात्रा है। पहाड़ की चोटी तक पहुँचने के लिए इंसान को हल्का होकर चलना होता है, यानी जो जरूरी नहीं है, उसे छोड़ना होता है। इंसान को बिना किसी आकर्षण में फँसे, पूरी लगन से उस रास्ते पर चलना होता है।

इंसान को अपने मन को खाली करना होता है, जो बहुत सारी बेकार

की जानकारियों से भरा होता है। जब मन खाली होता है, जब कोई विचार नहीं होता, तब सच्चाई उच्च मन में उतरती है।

मनुष्य को आत्म-ज्ञान हासिल करना चाहिए। उसे साफ दिल के साथ एक साफ-सुथरा जीवन जीना चाहिए। इंसान का दिल एकता और साथ मिलकर रहने की भावना से भरा होना चाहिए। उसका दिल सभी जीवों के लिए प्यार और दया से भरा होना चाहिए। मनुष्य को छोटी सोच, स्वार्थ और घमंड से छुटकारा पाना चाहिए।

अध्ययन, ध्यान और सेवा के जरिए ही कोई व्यक्ति मुक्ति की अवस्था तक पहुँच सकता है। एच.पी.बी. ने ध्यान का एक डायग्राम दिया था। इसमें उन्होंने 'जीवन की एकता' के मुख्य विचार पर जोर दिया था। जीवन एक ही है। उन्होंने कमियों के बारे में भी बात की—मनुष्य को कमियों को दूर करना चाहिए और अच्छी चीजें अपनानी चाहिए। उन्होंने एक और साधन के बारे में बात की, और वह है 'आत्म-चिंतन' का साधन।

आत्म-चिंतन के जरिए मनुष्य अपनी सभी नकारात्मक कमियों को दूर कर सकता है, जिनमें सबसे बड़ी कमी स्वार्थ है। एच.पी.बी ने आत्म-अनुशासन की जरूरत पर भी बात की। उन्होंने असली आंतरिक बदलाव पर जोर दिया, जो तब आएगा जब मनुष्य पूरी शांति और स्थिरता के साथ खुद को देखेगा (द वॉयस ऑफ द साइलेंस)। इसलिए, ऊपर बताई गई साधनाएँ और साथ ही सही-गलत की पहचान (विवेक) और इच्छा-रहित होने (वैराग्य) के गुण मिलकर भ्रम को खत्म करने और सच्चाई या सत्य तक पहुँचने का रास्ता बनाएंगे।

संदर्भ:

1. द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड 1, पृष्ठ 39, 274 और 622।
2. द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खंड 1 — प्रस्तावना (Proem)।
3. द वॉयस ऑफ द साइलेंस, खंड 1, पृष्ठ 1 और 2

प्यार और दया कैसे जीवन की एकता को समझने में मदद करते हैं

“अगर मैं इंसानों और फरिश्तों की भाषा में बोलूँ, लेकिन मुझमें प्यार न हो, तो मैं बस एक गूँजते हुए घंटे या खड़कते हुए झांझ जैसा हूँ। अगर मुझमें भविष्यवाणी करने का वरदान हो और मैं सारे रहस्यों और ज्ञान को समझ सकूँ, और अगर मुझमें पहाड़ों को हिला देने वाला विश्वास हो, लेकिन प्यार न हो, तो मैं कुछ भी नहीं हूँ। अगर मैं अपनी सारी संपत्ति गरीबों को दे दूँ और अपने शरीर को आग के हवाले कर दूँ, लेकिन मुझमें प्यार न हो, तो मुझे कुछ भी हासिल नहीं होता।”

— Paul the Apostle

एक ऐसा खूबसूरत सवाल जिसका कोई खूबसूरत जवाब नहीं मिल पाया।

जब मैंने पहली बार इस विषय पर बोलने का न्योता स्वीकार किया कि “प्यार और करुणा जीवन की एकता को समझने में कैसे मदद करते हैं,” तो मुझे बहुत सहज महसूस हुआ। यह सुनने में एक बहुत ही खूबसूरत और सीधी-सादी बात लगी—एक ऐसा विचार जिससे हम सभी बिना सोचे-समझे सहमत हो जाते हैं। मुझे लगा कि मैं कुछ दिल को छू लेने वाली कहानियाँ ढूँढ़ लूँगा, थोड़ी रिसर्च करूँगा और मंच पर कुछ ऐसी बातें कहूँगा जो लोगों को अच्छा और सुकून देने वाला एहसास कराएँ।

लेकिन जैसे ही मैंने तैयारी शुरू की, मुझे एक रुकावट का सामना करना पड़ा। मुझे अंदर से एक गहरा विरोध महसूस हुआ और आखिरकार, मुझे एक ऐसी बात समझ में आई जिसे लिखकर बताना भी डरावना लगता है; अब मुझे यह यकीन नहीं रहा कि प्यार और करुणा हमें जीवन की एकता को समझने में मदद कर सकते हैं।

अपनी राह वापस पाने के लिए, मैंने थियोसोफिकल सोसाइटी की जड़ों—यानी इसके शुरुआती उद्देश्यों—का सहारा लिया, जो अब 150 साल पुराने हैं। मैंने उन उद्देश्यों को ध्यान से पढ़ा और एक दिलचस्प बात देखी: हमारे उद्देश्यों में “प्यार” का जिक्र नहीं है। उनमें “दया” का भी जिक्र नहीं है।

* अड्यार लॉज के सदस्य, और “अड्यार में आयोजित इंडियन सेक्शन कन्वेंशन— II के दौरान दिया गया भाषण।

असल में, अपनी राह वापस पाने के लिए, मैंने थियोसोफिकल सोसाइटी की जड़ों—यानी इसके शुरुआती उद्देश्यों—का सहारा लिया, जो अब 150 साल पुराने हैं। मैंने उन उद्देश्यों को ध्यान से पढ़ा और एक दिलचस्प बात देखी: हमारे उद्देश्यों में “प्यार” का जिक्र नहीं है, उनमें “दया” का भी जिक्र नहीं है। असल में, उनमें भावनाओं या गुणों का कोई जिक्र ही नहीं है।

वे एकता को एक भावना नहीं, बल्कि एक सच्चाई के तौर पर देखते हैं। सोसाइटी “इंसानियत के यूनिवर्सल भाईचारे” को सिर्फ एक सामाजिक आदर्श या नैतिक चाहत नहीं, बल्कि “कुदरत की एक सच्चाई” मानती है। क्योंकि सभी जीव आपस में जुड़े हुए हैं, इसलिए प्यार और दया वे सीढियाँ नहीं हैं जिनसे हम एकता तक पहुँचते हैं; वे उस एकता का स्वाभाविक और जरूरी रूप हैं जो पहले से ही मौजूद है। हमारे संस्थापकों ने किसी भावना से शुरुआत नहीं की थी; उन्होंने एक सच्चाई से शुरुआत की थी।

फिल्ममेकर की नजर: न्यूरल वाई—फाई और 'खुद' का मिटना

मैं एक फिल्ममेकर हूँ। मेरी दुनिया में, हम वह बनाते हैं जिसे दर्शक “जादू” कहते हैं, लेकिन असल में वह जादू इंसानी दिमाग की बनावट पर टिका होता है—एक ऐसी बनावट जो सीट पर बैठे दर्शक और स्क्रीन पर मौजूद किरदार के बीच की सीमा को धुंधला करने के लिए बनाई गई है।

उस पिछली बार के बारे में जरा सोचिए जब आप अंधेरे सिनेमा हॉल में बैठे थे। आप एक आरामदायक कुर्सी पर हैं, पूरी तरह सुरक्षित। स्क्रीन पर, बस टिमटिमाती परछाइयाँ और रोशनी की लहरें हैं। फिर भी, जब कोई किरदार किसी अपने को खोता है, तो आप रो पड़ते हैं। जब कोई हीरो चट्टान से लटका होता है, तो आपकी हथेलियों में पसीना आ जाता है। आपकी धड़कनें तेज हो जाती हैं। आपका होश वाला दिमाग जानता है कि यह एक फिल्म है, फिर भी आपका शरीर मानता है कि आप उसी चट्टान पर हैं।

इसका जवाब ‘मिरर न्यूरॉन्स’ (Mirror Neuron) नाम की एक न्यूरोलॉजिकल प्रक्रिया में छिपा है—जिसे मैं “न्यूरल वाई—फाई” कहना पसंद करता हूँ। ये न्यूरॉन्स तब भी एक्टिव होते हैं जब आप कोई काम करते हैं और तब भी जब आप किसी और को वह काम करते हुए देखते हैं। जब आप मुख्य किरदार को रोते हुए देखते हैं, तो आपका दिमाग उस दुख का पूरा अंदरूनी अनुभव (सिमुलेशन) करता है। उस अंधेरे सिनेमा हॉल में, “खुद” और “दूसरे” के बीच की सीमा मिट जाती है।

इससे एक बहुत गहरी बात साबित होती है: परोपकार कोई ऐसी “नैतिक चीज” नहीं है जिसे हमें अभ्यास करके बहुत मेहनत से अपनाना पड़ा है। यह एक बायोलॉजिकल जरूरत है। अलग-अलग महसूस करना सीखा हुआ व्यवहार है; एकता तो हमारा मूल स्वभाव (हार्डवेयर) है।

एकता के ज्ञानी The Sages of Oneness

इस बायोलॉजिकल सच्चाई को अलग-अलग समय और जगहों पर हुए महान ज्ञानियों ने और भी गहराई से समझाया है—वे ज्ञानी जिन्होंने इस जन्मजात “हार्डवेयर” को उसकी सबसे बेहतरीन और शानदार क्षमता तक पहुँचाया।

जिहू कृष्णमूर्ति ने “देखने वाले का देखे जाने वाले में बदल जाने” की बात कही थी—यानी खुद और दुनिया के बीच की दीवार का पूरी तरह खत्म हो जाना। वे कोई ऐसी फिलॉसफी नहीं बता रहे थे जिस पर बहस की जा सके; वे एक ऐसी अवस्था की ओर इशारा कर रहे थे जिसमें “मैं” और “तुम” अलग-अलग नहीं रह जाते।

फिर अरुणाचल के ऋषि, रमण महर्षि हैं। जब चोरों ने उनके आश्रम पर हमला किया और उनके शिष्यों को पीटा, तो महर्षि के अपने शरीर पर भी चोट के निशान उभरने लगे। दूसरों को लगी चोटों का असर उनकी त्वचा पर भी हुआ। जब उनसे पूछा गया कि जब चोट दूसरों को लग रही थी तो उन्हें कैसे चोट लग सकती है, तो उन्होंने बस इतना कहा: “कोई दूसरा है ही नहीं।”

एच.पी. ब्लावात्स्की ने “सभी आत्माओं की मौलिक एकता” के बारे में लिखा था। उन्होंने यह नहीं कहा कि हमें एक जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए, उन्होंने कहा कि हम एक ही हैं। एकता कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हासिल करना हो; यह एक ऐसी बुनियादी अवस्था है जिसे हम देख नहीं पाते क्योंकि अहंकार के शोर-शराबे में हमारा ध्यान भटक जाता है।

शरीर एक शिक्षक के रूप में: एकता और अलगाव का कैंसर

इस सच को समझने के लिए हमें किसी सिनेमा स्क्रीन या किसी ज्ञानी की जरूरत नहीं है। हमें बस अपने शरीर को देखने की जरूरत है। अभी, आपके शरीर में खरबों कोशिकाएँ अद्भुत और अटूट तालमेल के साथ काम कर रही हैं। वे ऐसा इसलिए नहीं करतीं कि वे एक-दूसरे से भावुक होकर “प्यार” करती हैं, या इसलिए कि वे हर सुबह दया के गुण पर ध्यान लगाती हैं।

वे तालमेल बिठाकर काम करते हैं क्योंकि उनके लिए अलग-अलग

होने का कोई विचार ही नहीं होता। फेफड़े की सेहत ही दिल की सेहत है। उंगली पर लगी चोट पूरे शरीर को महसूस होती है।

लेकिन क्या होता है जब कोशिकाओं का एक समूह इस एकता को भूल जाता है? वे अलग-अलग गुच्छों की तरह काम करने लगती हैं। वे लालच में आकर संसाधन (रिसोर्स) का इस्तेमाल करती हैं; वे उस जीव की परवाह किए बिना अपनी संख्या बढ़ाती हैं जिसमें वे रहती हैं। हमारे पास इसके लिए एक सटीक नाम है: कैंसर।

अलगाव ही इंसानियत का कैंसर है। जब हम खुद को असल में अलग समझते हैं, तो हम बिगड़ी हुई कोशिकाओं की तरह काम करते हैं—हम उसी ‘जीवन-शरीर’ पर हमला करते हैं जो हमें जिंदा रखता है।

उल्टा नजरिया: प्यार लक्षण है, कारण नहीं

अपने ही हाथ के बारे में सोचिए। अगर आपके बाएं हाथ में चोट लग जाए, तो आपका दायां हाथ उसकी मदद के लिए इसलिए नहीं दौड़ता क्योंकि वह “दया की भावना” की प्रैक्टिस कर रहा है। वह दूसरे हाथ के लिए किसी खास प्यार की वजह से ऐसा नहीं करता। वह मदद इसलिए करता है क्योंकि वह उसी शरीर का हिस्सा है। बाएं हाथ को खून बहता हुआ छोड़ने का मतलब है खुद को भी खून बहता हुआ छोड़ना। यह सोच सब कुछ बदल देती है। जब मैं सड़क पर किसी बेघर बच्चे को भूखा देखता हूँ, और अगर मैंने सच में एकता को महसूस किया है, तो मैं अपनी रोटी इसलिए नहीं बांटता क्योंकि मैं एक “दयालु इंसान” हूँ। मैं इसे इसलिए बांटता हूँ क्योंकि वह भूख मेरी अपनी है। उस बच्चे में, मैं भी भूखा हूँ।

हमने लंबे समय से प्यार और दया को ऐसे गुणों के तौर पर देखा है जिन्हें हमें बहुत मेहनत से अपनाना पड़ता है, जैसे किसी खराब ऑपरेटिंग सिस्टम में सॉफ्टवेयर अपग्रेड करना हो। लेकिन ये कोई एक्स्ट्रा चीजें नहीं हैं, ये जन्मजात हैं। असली एक्स्ट्रा चीजें—यानी खामियां (glitches)—तो नफरत, गुस्सा और अलग अहंकार का भ्रम हैं।

इसलिए, जीवन की एकता को समझने का रास्ता कुछ जोड़ने का रास्ता नहीं है। यह घटाने का—यानी छोड़ने का—रास्ता है। जब हम ‘अलग’ होने की अहंकार की जिद को छोड़ देते हैं, तो एकता किसी दूर के इनाम की तरह नहीं मिलती; बल्कि यह एक ऐसी सच्चाई के तौर पर सामने आती है जो हमेशा से यहीं मौजूद थी।

तो, मेरी खोज का मुख्य पहलू यही है: 'प्यार और दया वे साधन नहीं हैं जिनका इस्तेमाल हम एकता तक पहुँचने के लिए करते हैं। वे उस व्यक्ति की पहचान हैं जिसने इसे पहले ही महसूस कर लिया है।

एक दुनिया, एक जीवन: एक नई इंसानियत

जब थियोसोफिकल सोसाइटी अपने 150 साल पूरे होने का जश्न मना रही है, तो इस सम्मेलन का विषय— “एक दुनिया, एक जीवन; एक नई इंसानियत की भावना”—अपने शुरुआती मतलब से कहीं ज्यादा गहरा और क्रांतिकारी अर्थ रखता है। “नई इंसानियत” का मतलब यह नहीं है कि लोग दयालु बनने की ज्यादा कोशिश करें। यह ऐसी इंसानियत नहीं है जो दया पर और वर्कशॉप जोड़कर अपने पहले से भरे—पूरे कैलेंडर को और भर ले। यह वह इंसानियत है जिसने आखिरकार अलगाव के कैंसर का इलाज करना शुरू कर दिया है।

यह एक ऐसी मानवता है जिसने न केवल एक काव्यात्मक भावना के रूप में, बल्कि एक जीती-जागती और महसूस की जाने वाली सच्चाई के रूप में यह पहचाना है कि हर दिल में केवल एक ही जीवन धड़क रहा है और हर सांस को बनाए रखने वाली एक ही दुनिया है।

जब हम इस ‘एक आत्मा’ को महसूस करते हैं—सिर्फ एक सिद्धांत के तौर पर नहीं, बल्कि सीधे अनुभव के तौर पर—तो हमें पता चलेगा कि हमें अब और कोशिश करने की जरूरत नहीं है। प्यार उतना ही स्वाभाविक होगा जितनी साँस लेना। करुणा उतनी ही सहज होगी जितनी दिल की धड़कन। ये ऐसी चीजें नहीं होंगी जो हम करते हैं; ये बस वो होंगी जो हम हैं।

प्रेषित पॉल के शब्द (Paul the Apostle words), जिनसे हमने शुरुआत की थी, इस नजरिए से एक नया अर्थ देते हैं। एकता के गहरे एहसास के बिना—अलग होने के भ्रम के खत्म हुए बिना—चाहे कितनी भी अच्छी बात कही जाए, कितना भी जबरदस्त विश्वास हो, या कितना भी बड़ा त्याग किया जाए, जैसा कि वे कहते हैं, सब बेकार है लेकिन जब अलगाव का पर्दा हट जाता है, तो प्यार का अभ्यास नहीं किया जाता उसे साँस की तरह जिया जाता है।

और शायद, यही वह सबसे पुराना और सबसे जरूरी निमंत्रण है जो थियोसोफिकल सोसाइटी ने दुनिया के सामने रखा है।

दीपक पांड्या*

थियोसोफी का आह्वान

“सच्चा थियोसोफिस्ट परोपकारी होता है — वह अपने लिए नहीं, बल्कि उस दुनिया के लिए जीता है जिसमें वह रहता है।” इस संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली कथन में, महात्मा के.एच. ने थियोसोफिकल आंदोलन के मूल सार को समाहित किया है। ये शब्द केवल नैतिक निर्देश या आदर्शवादी आकांक्षा नहीं हैं; ये आध्यात्मिक दृष्टिकोण की एक गहरी घोषणा हैं। ये एक सच्चे थियोसोफिस्ट के मूल चरित्र को परिभाषित करते हैं और स्वयं थियोसोफी के मुख्य उद्देश्य को उजागर करते हैं—इंसानों में ऐसी चेतना जगाना जो व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर पूरी मानवता के कल्याण को अपनाती है।

थियोसोफी साधक से जीवन से दूर होने के लिए नहीं कहती, और न ही वह ऐसे त्याग की तारीफ करती है जो जिम्मेदारी से अलग हो। इसके उलट, यह जीवन में और गहराई से जुड़ने का आह्वान करती है—एक ऐसा जुड़ाव जो समझदारी, दया और एकता की लगातार बढ़ती भावना से प्रेरित हो। “अपने लिए नहीं, बल्कि उस दुनिया के लिए जीना जिसमें हम रहते हैं” का मतलब है यह समझना कि व्यक्ति का अस्तित्व मानवता के सामूहिक जीवन और असल में सभी जीवित प्राणियों के जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। यह समझ कोई भावुकता नहीं है; यह अलग-अलग रूपों में छिपी बुनियादी एकता की गहरी समझ से पैदा होती है।

गुरु जिस परोपकार की बात करते हैं, वह केवल दान-पुण्य या संगठित समाज-सेवा तक सीमित नहीं है, भले ही ये काम कितने भी नेक क्यों न हों। यह चेतना का परोपकार है, एक ऐसी जीवन-शैली जो इस समझ पर आधारित है कि सारा जीवन एक है। जब यह समझ केवल जानकारी न रहकर जीवंत ज्ञान बन जाती है...

यह बौद्धिक सहमति है, जिसमें करुणा स्वाभाविक रूप से बिना किसी हिसाब-किताब या इनाम की उम्मीद के बहती है। ऐसा परोपकारी व्यक्ति

* हरजीवन आश्रम लॉज, कडोली, गुजरात फेडरेशन के सदस्य; और इंडियन सेक्शन, TS के नेशनल लेक्चरर।

इसलिए सेवा नहीं करता कि ऐसा करना पुण्य का काम है, बल्कि इसलिए करता है क्योंकि अलगाव की भावना उसकी सोच पर हावी नहीं रहती। किसी की मदद करते समय, व्यक्ति किसी दूसरे का “भला” नहीं कर रहा होता; वह असल में जीवन के प्रति ही प्रतिक्रिया दे रहा होता है।

यह आंतरिक परोपकार ही मानवता के ‘सार्वभौमिक भाईचारा’ की जीवंत नींव बनाता है, जो थियोसोफिकल सोसाइटी का पहला और सबसे मुख्य उद्देश्य है। थियोसोफिकल नजरिए से, भाईचारा न तो कोई सामाजिक व्यवस्था है और न ही कोई भावनात्मक आदर्श; यह प्रकृति का एक ऐसा सच है जिसे महसूस करना और जीवन में उतारना जरूरी है। इस एहसास के बिना, भाईचारे की सारी बातें केवल सैद्धांतिक और कमजोर बनी रहती हैं, जो विश्वास, नस्ल, संस्कृति या राय के अंतर से आसानी से टूट सकती हैं। थियोसोफिकल आंदोलन इस एहसास को बढ़ावा देने की कोशिश करता है; इसके लिए वह अंधविश्वास के बजाय समझ को और लकीर का फकीर बनने के बजाय गहरी समझ (इनसाइट) को प्रोत्साहित करता है।

महात्मा के.एच. आगे इस बात पर जोर देते हैं कि दर्शनशास्त्र—जीवन और उसके रहस्यों की सही समझ—आवश्यक आधार प्रदान करता है और अनुसरण करने का सही मार्ग दिखाता है। यह कथन थियोसोफी के मूल में निहित एक महत्वपूर्ण संतुलन को उजागर करता है। समझ के बिना करुणा भटकने वाले कार्यों की ओर ले जा सकती है, जबकि करुणा के बिना बौद्धिक ज्ञान निष्फल और स्वार्थी हो सकता है। थियोसोफी इस बात पर जोर देती है कि बुद्धि और परोपकार को साथ-साथ एक दूसरे को मजबूत और परिष्कृत करते हुए विकसित होना चाहिए।

थियोसोफी द्वारा प्रोत्साहित दार्शनिक खोज न तो अटकलबाजी है और न ही जीवन से अलग अमूर्त तत्वमीमांसा। यह एक गंभीर प्रयास है अस्तित्व को चलाने वाले नियमों को समझना—ऐसे नियम जो भौतिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्तरों पर काम करते हैं। कर्म, पुनर्जन्म, चेतना, दुख, मृत्यु और मानव जीवन के मकसद से जुड़े सवालों को सिर्फ विश्वास की बात नहीं माना जाता, बल्कि उन्हें सोच-समझकर अध्ययन करने, चिंतन करने और आंतरिक रूप से परखने के विषय के तौर पर देखा जाता है। ऐसी खोज—बीन से जीवन में धीरे-धीरे तालमेल और मकसद साफ होने

लगता है, और इंसानी अनुभव को विकास की एक विशाल, व्यवस्थित और दयालु प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है।

यह सही समझ उस नजरिए को बदल देती है जिससे कोई व्यक्ति खुद को और दुनिया को देखता है। जब कर्म के नियम को समझा जाता है, तो दोष देने की जगह जिम्मेदारी का भाव आता है, नाराजगी की जगह सब्र आता है, और निराशा की जगह सीखने की भावना आती है। जब पुनर्जन्म को निरंतरता और विकास के सिद्धांत के रूप में समझा जाता है, तो जीवन को एक छोटी, अलग-थलग घटना के तौर पर नहीं, बल्कि चेतना के विस्तार की एक लंबी यात्रा के एक अध्याय के रूप में देखा जाता है। ऐसी समझ से दूसरों को परखने या जज करने का नजरिया नरम होता है, सहनशीलता बढ़ती है, और नैतिक रूप से जीने का संकल्प मजबूत होता है—यह संकल्प डर या आज्ञापालन की वजह से नहीं, बल्कि गहरी समझ की वजह से लिया जाता है।

इसलिए, गुरु द्वारा बताया गया सही रास्ता सभी साधकों पर थोपा गया कोई सख्त नियम नहीं है। यह एक जीवंत मार्ग है, जो हर व्यक्ति के आंतरिक विकास और परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। थियोसोफी विचारों की स्वतंत्रता का सम्मान करती है और इसे पवित्र मानती है, क्योंकि वह समझती है कि सच्चाई को बिना तोड़े-मरोड़े थोपा नहीं जा सकता। फिर भी, यह स्वतंत्रता बेपरवाही की छूट नहीं है; इसके साथ ही स्पष्ट रूप से सोचने, दयाभाव से काम करने और अपने जीवन को सार्वभौमिक सिद्धांतों के अनुरूप ढालने की जिम्मेदारी भी आती है।

थियोसोफिकल आंदोलन की एक खास बात यह है कि यह आध्यात्मिक चाहत को रोजमर्रा की जिदगी से अलग नहीं मानता। आध्यात्मिक रास्ता सिर्फ ध्यान, पढ़ाई या एकांतवास तक सीमित नहीं है; यह रिश्तों, काम, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक फैसलों में भी झलकता है। एक सच्चा थियोसोफिस्ट जिदगी के हर पहलू में जागरूकता लाने की कोशिश करता है, क्योंकि वह समझता है कि अंदरूनी विकास और बाहरी व्यवहार एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इस तरह, आध्यात्मिक तरक्की का असली पैमाना चरित्र होता है, न कि अलौकिक अनुभव, दिमागी तेजी या बाहरी धार्मिकता होती है।

इस नजरिए से देखें तो निस्वार्थ भाव किसी व्यक्ति पर थोपा गया त्याग या खुद को दबाने का काम नहीं है, बल्कि समझ का स्वाभाविक विकास

है। जैसे—जैसे अलग होने की भावना कम होती है, सिर्फ अपने फायदे के लिए काम करने की मजबूरी भी कमजोर पड़ जाती है। उस समय सेवा अपने—आप और खुशी—खुशी की जाने वाली चीज बन जाती है, जो पहचान या आध्यात्मिक पुण्य पाने की चाहत वाले सूक्ष्म अहंकार से मुक्त होती है। इस प्रकार की सेवा भले ही शांत और बिना दिखे की जाए, लेकिन उसमें बदलाव लाने की ताकत होती है, क्योंकि यह निजी महत्वाकांक्षा के बजाय जिंदगी के साथ तालमेल से पैदा होती है।

थियोसोफिकल आंदोलन का मकसद धर्म, दर्शन और विज्ञान के बीच दिख रहे अंतर को कम करना भी है। यह धार्मिक परंपराओं को आध्यात्मिक समझ के स्रोत के तौर पर महत्व देता है, साथ ही तर्कपूर्ण जांच और वैज्ञानिक खोज की अहमियत को भी मानता है। सच्चाई के अलग—अलग रूपों के पीछे छिपी एकता को खोजकर, थियोसोफी बिना किसी कट्टरता के सम्मान और बिना किसी अविश्वास के जांच—पड़ताल को बढ़ावा देती है। विचारधाराओं के टकराव और धार्मिक असहिष्णुता के इस दौर में, यह सबको साथ लेकर चलने वाली सोच बहुत महत्व रखती है।

तुलनात्मक अध्ययन और खुली बातचीत को बढ़ावा देकर, यह आंदोलन उन बाधाओं को धीरे—धीरे खत्म करने का काम करता है जो इंसानों को एक—दूसरे से अलग करती हैं। यह मानवता को याद दिलाता है कि सच्चाई पर किसी एक परंपरा का एकाधिकार नहीं है, और ज्ञान समय, संस्कृति और इंसानी जरूरतों के हिसाब से कई रूपों में सामने आता है। ऐसी समझ आध्यात्मिक प्रतिबद्धता को कमजोर नहीं करती; बल्कि, इसे संकीर्णता और डर से मुक्त करके और गहरा बनाती है।

आखिरकार, थियोसोफिकल आंदोलन का मकसद अनुयायी बनाना नहीं, बल्कि विचारकों को जगाना है; विश्वास करने वालों को इकट्ठा करना नहीं, बल्कि जिम्मेदार और दयालु इंसान बनाना है। इसकी सफलता को संख्या, संस्थाओं या बाहरी प्रभाव से नहीं मापा जा सकता, बल्कि उस चेतना की गुणवत्ता से मापा जा सकता है जिसे यह लोगों में विकसित करने में मदद करता है। ज्यादा जागरूकता, ईमानदारी और दया के साथ जिया गया हर जीवन मानवता के विकास में एक मूक योगदान बन जाता है।

इस तरह, महात्मा के.एच. के शब्द एक याद दिलाने वाली बात और

एक चुनौती, दोनों के तौर पर सामने आते हैं। एक सच्चा थियोसोफिस्ट होने का मतलब है दुनिया के लिए जीना—बोझ बनकर नहीं, बल्कि एक सौभाग्य के तौर पर; समझ हासिल करना—बौद्धिक घमंड के लिए नहीं, बल्कि समझदारी भरे और प्यार—भरे कामों की नींव के तौर पर। दर्शन और परोपकार के इसी मेल में थियोसोफिकल आंदोलन का स्थायी मकसद छिपा है—एक ऐसा मकसद जो आज भी उतना ही जरूरी है जितना कि इसे पहली बार बताते समय था, और जो मानवता को समझदारी, एकता और दयालु जिम्मेदारी से निर्देशित भविष्य की ओर बुलाता है

समाचार और टिप्पणियाँ

दिल्ली

मई के महीने में दिल्ली थियोसोफिकल फेडरेशन के तत्वावधान में 'जे. कृष्णमूर्ति के जीवन की दिलचस्प घटनाएं' विषय पर दो ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किए गए। पहला व्याख्यान 2 मई को वीरा पेरुमा सुसुनाग ने दिया और दूसरा व्याख्यान 16 मई को राष्ट्रीय व्याख्याता बन्धु हर्षवर्धन सेठ ने दिया।

राष्ट्रीय व्याख्याता डॉ. राजीव गुप्ता ने 23 मई को आयोजित प्रत्यक्ष बैठक में 'चक्र और कुंडलिनी' के बारे में बात की।

नेशनल लेक्चरर बन्धु एस.के. पांडे ने 'द एलिमेंटल वर्ल्ड' विषय पर एक ऑनलाइन लेक्चर दिया। यह लेक्चर 30-5-2026 को शंकर लॉज के तत्वावधान में आयोजित किया गया था।

गुजरात

भावनगर लॉज के सदस्यों ने 10 मई को इंडियन सेक्शन के प्रेसिडेंट बन्धु प्रदीप एच. गोहिल की गरिमामयी उपस्थिति में लॉज का 145वां स्थापना दिवस मनाया। इस मौके पर बन्धु गोहिल ने 'थियोसोफिस्ट होने का क्या अर्थ है' विषय पर एक प्रेरणादायक भाषण दिया और इस लॉज के सदस्य के तौर पर उन्होंने इसकी शानदार और लंबी यात्रा का वर्णन किया। कृष्णानगर लॉज के सदस्य भी पूरे उत्साह के साथ इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके बाद, 23 मई को डॉ. पार्थ एल. अय्यर ने 'ज्योतिष शास्त्र का विज्ञान' विषय पर गहन शोध पर आधारित एक भाषण दिया। उनकी प्रस्तुति ने सदस्यों को आम अंधविश्वास और ज्योतिष के पीछे के गहरे वैज्ञानिक सिद्धांतों के बीच अंतर समझने में मदद की।

केरल

फरवरी 2026 माह में फेडरेशन के कुछ लॉजों द्वारा निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गईं:

कन्नूर/गौतम लॉज और गीता लॉज:

तीनों लॉज (पिलिकोड स्थित सत्संग लॉज, चोव्वा स्थित गीता लॉज, टेलिचेरी स्थित लेडबीटर हॉल और महादेवा)। वडकरा में स्थित लॉज में, जहाँ

सही इमारत न होने या लोगों के न आने की वजह से बैठकें नहीं हो पाती थीं, वहाँ यह तय किया गया कि इच्छुक 'अड्यार' (17 फरवरी) पर कन्नूर के गौतम लॉज में इकट्ठा होकर सर ओल्कोट को कृतज्ञता के साथ याद करें। लेकिन गीता लॉज के बन्धु मनोज और बन्धु दिवाकरन के अनुरोध पर, यह बैठक गीता लॉज में आयोजित की — एक ऐसी जगह जहाँ पिछले 65 वर्षों से कोई बैठक नहीं हुई थी और जिसकी एक साल पहले ही मरम्मत की गई थी। गौतम लॉज की सदस्य और केरल थियोसोफिकल फेडरेशन की सचिव, बहन शोभा प्रकाश ने इस अवसर पर अड्यार दिवस के महत्व और थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापकों और वरिष्ठ सदस्यों को कृतज्ञता के साथ याद करने की अहमियत पर बात की। उन्होंने कहा कि हमें कृतज्ञता का भाव अपनाना चाहिए, क्योंकि कृतज्ञता असल में प्रार्थना का ही एक रूप है और हर चीज के लिए आभारी होना ही प्रार्थनापूर्ण जीवन जीना है। बन्धु वेणुगोपालन, जिनकी कुछ दिन पहले ही डायलिसिस हुई थी, इस कार्यक्रम में शामिल हुए और उन्होंने जिओर्डानो ब्रुनो और जे. कृष्णमूर्ति के बारे में बात की; इन दोनों का निधन भी 17 फरवरी को ही हुआ था। उन्होंने बहुत दिलचस्प तरीके से बताया कि संत वल्ललार ने अपने अनुयायियों से कहा था कि दो विदेशी आएंगे और उनके सत्य, करुणा और सार्वभौमिक भाईचारे के विचारों का प्रसार करेंगे, जिन्हें पूरी दुनिया में बहुत स्वीकार्यता मिलेगी। संत वल्ललार ने थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना से कुछ साल पहले ही यह भविष्यवाणी कर दी थी। इसके बाद, बन्धु दिवाकरन ने लेडबीटर और एनी बेसेंट के बारे में बात की।

थलासेरी/लेडबीटर हॉल: अड्यार दिवस मनाया गया और मासिक बैठक हुई। अध्यक्ष, बन्धु के.एम. राजन ने कर्नल ओल्कोट, एच.पी.बी., लेडबीटर और डॉ. एनीबेसेंट के बारे में बात की; थियोसोफिकल सोसाइटी में उनके योगदान, अड्यार में इंटरनेशनल हेडक्वार्टर और वाराणसी में इंडियन सेक्शन हेडक्वार्टर की स्थापना के बारे में बताया। उन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी द्वारा चलाए जा रहे शैक्षिक संस्थानों, गरीबों को दी जाने वाली मुफ्त शिक्षा और आर्थिक मदद, तथा केरल में TOS के कामों का भी जिक्र किया। और फिर, उन्होंने कहा कि थियोसोफिकल सोसाइटी में महिला सशक्तिकरण को बहुत ज्यादा महत्व दिया जाता है।

कोझिकोड/अशोका शंकर लॉज: यहाँ "द वॉयस ऑफ द साइलेंस" पर नियमित रूप से रविवार की क्लास और चर्चाएँ आयोजित की गईं। मंगलवार की बैठकों के हिस्से के तौर पर, डॉ. एनी बेसेंट की किताब

“विजडम ऑफ द उपनिषद” पर बातचीत और चर्चा का सत्र आयोजित किया गया। डॉ. महिपाल ने भाषण और चर्चा का संचालन किया। 17 फरवरी को, बहन एडवोकेट बीना ने अड्यार दिवस के महत्व पर बात की; इस मौके पर बन्धु एडवोकेट अनिलकुमार एम, सिस्टर रेणुका और बन्धु साजित ने भी अपने विचार रखे।

त्रिचूर/त्रिचूर लॉज: यहाँ “द की टू थियोसोफी” पर स्टडी क्लास आयोजित की गई। अड्यार दिवस मनाया गया और प्रेसिडेंट बन्धु रामनाथन ने जिओर्डानो ब्रूनो और जे. कृष्णमूर्ति के जीवन और कार्यों के बारे में बात की। सेक्रेटरी दामोदरन ने लेडबीटर और ओल्कोट के बारे में बात की।

पलक्कड/ओल्कोट लॉज: थियोसोफी, थियोसोफिकल सोसाइटी और थियोसोफी के अध्ययन से जुड़े अध्यायों पर दो ऑनलाइन बैठकें आयोजित की गईं।

एर्नाकुलम/श्री शंकर लॉज: हर बुधवार को जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं पर एक अध्ययन कक्षा आयोजित की गई। इसके अलावा, 21 और 28 फरवरी को पी. पावरी की किताब “थियोसोफी एक्सप्लेंड इन क्वेश्चन्स एंड आंसर्स” का अध्ययन किया गया।

अलाप्पुझा/अन्नपूर्णा लॉज:

- 1) बन्धु विश्वनाथ ने “आध्यात्मिक स्वतंत्रता — प्रासंगिकता और महत्व” पर भाषण दिया, जिसके बाद चर्चा हुई;
- 2) बन्धु पंकजक्षन ने “थियोसोफी क्या सिखाती है” पर भाषण दिया;
- 3) अड्यार दिवस मनाया गया;
- 4) बन्धु एस. शिवदास ने “थियोसोफी के प्रकाश में” विषय पर बात की; और
- 5) “भाग्य और स्वतंत्र इच्छा” विषय पर चर्चा की गई। इसके अलावा, लॉज में ‘थियोसोफिकल सिद्धांतों’ और ‘भाग्य और स्वतंत्र इच्छा’ पर चर्चाएँ हुईं।

फिर, अप्रैल 2026 के महीने में निम्नलिखित गतिविधियाँ हुईं:

कन्नूर/गौतम लॉज: थियोसोफिकल सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करने पर चर्चा।

थलासेरी/लेडबीटर हॉल: 23 अप्रैल को मासिक बैठक हुई, जिसमें अध्यक्ष बन्धु के.एम. राजन ने सदस्यों को हाल की गतिविधियों के बारे में

जानकारी दी। इसके बाद बन्धु सी.के. बालचंद्रन ने गीता पर एक स्टडी क्लास ली।

त्रिचूर/त्रिचूर थियोसोफिकल लॉज: 11 और 25 अप्रैल को एच.पी. बी. की किताब “द की टू थियोसोफी” पर स्टडी क्लास आयोजित की गई।

पलक्कड/ओल्कोट लॉज: सदस्यों ने दो ऑनलाइन बैठकों में हिस्सा लिया, जो इन विषयों पर आयोजित की गई थीं: 1) “थियोसोफी और थियोसोफिकल सोसाइटी”, और 2) ‘थियोसोफी का अध्ययन’।

एर्नाकुलम/श्री शंकर लॉज:

- 1) जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं पर स्टडी क्लास हर बुधवार को आयोजित की गई, सिवाय 15 अप्रैल के, क्योंकि उस दिन विशु का त्योहार था।
- 2) पी. पावरी की किताब “थियोसोफी एक्सप्लेंड इन क्वेश्चन्स एंड आंसर्स” पर स्टडी क्लास हर शनिवार को आयोजित की गई।
- 3) TOS की एक बैठक हुई जिसमें पदाधिकारियों को चुना गया।

अलाप्पुझा/अन्नपूर्णा लॉज: लॉज में ये कार्यक्रम आयोजित किए गए:

- 1) ‘धर्म’ पर चर्चा;
- 2) बन्धु पंकजक्षन ई.पी. का भाषण;
- 3) बन्धु एस. शिवदास का मलयालम में “महात्माकलुम गुप्तविद्यायुम” (महान आत्माएं और गुप्त ज्ञान) विषय पर भाषण
- 4) ‘ज्योतिर्गमयम’ पर मासिक भाषण।

मद्रास

26 मार्च 2026 को, चेन्नई के गांधी नगर लॉज ने ‘द वॉयस ऑफ द साइलेंस’ किताब पर हर हफ्ते ऑनलाइन स्टडी क्लास शुरू की। प्रोफेसर सी. ए. शिंदे हर गुरुवार को यह क्लास लेते हैं। यह क्लास शुरू में गांधी नगर लॉज के नए सदस्यों के लिए शुरू की गई थी, और बाद में इसे सभी सदस्यों के लिए खोल दिया गया। अब इंडियन सेक्शन के अलग-अलग लॉज से कई सदस्य इसमें शामिल हो रहे हैं।

इन क्लास को बहुत अच्छा प्रत्युत्तर मिला है। 7 मई से हमारी गर्मियों की छुट्टियां चल रही हैं। क्लास 18 जून से फिर शुरू होंगी।

अप्रैल 2026 की तिमाही की शुरुआत रविवार, 5 अप्रैल 2026 की दोपहर को हुई, जब अड्यार लॉज ने ब्लावत्स्की बंगले में “एक भक्तिपूर्ण शाम” (Devotional Evening) का आयोजन किया। लॉज की प्रेसिडेंट डॉ. आर. रेवती के नेतृत्व में और अड्यार लॉज के कई प्रमुख सदस्यों की भागीदारी के साथ, इस सत्र में संगीत और नृत्य के जरिए एक शांत और चिंतनशील माहौल बनाया गया, जिससे समुदाय के मौसमी कार्यक्रमों को पारंपरिक रचनात्मक अभिव्यक्ति से जोड़ा गया।

अगले सप्ताह, रविवार, 12 अप्रैल 2026 को एक दो-तरफा कार्यक्रम हुआ जिसमें फेडरेशन के दो अलग-अलग तरह के लोगों को शामिल किया गया। सुबह 10:45 बजे यूथ हेडक्वार्टर में कार्यक्रम शुरू हुआ, जहाँ बन्धु आर. वी. युगेश की अगुवाई में वसंत यूथ लॉज ने मैडम एच. पी. ब्लावात्स्की की जीवनी “व्हेन डेलाइट कम्स” पर एक स्टडी पेश की।

इस सेशन में युवा सदस्यों को थियोसोफिकल आंदोलन की ऐतिहासिक शुरुआत और बुनियादी परंपरा के बारे में बताया गया।

उसी दिन दोपहर बाद, शाम 4:00 बजे ध्यान फिर से ब्लावत्स्की बंगले की ओर गया, जहाँ गांधी नगर लॉज ने स्पीकर सुश्री जयश्री कन्नन के कार्यक्रम की मेजबानी की। “गीता, कबीर और कृष्णमूर्ति” शीर्षक वाले उनके संगीतमय व्याख्यान में तुलनात्मक दर्शन पर चर्चा की गई; इसमें प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों, मध्यकालीन रहस्यवाद और 20वीं सदी के आधुनिक दर्शन से आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक विचारों को समझाते हुए तुलना की गई।

अप्रैल का कार्यक्रम रविवार, 26 अप्रैल 2026 को समाप्त हुआ। इस दिन MTF किलपॉक लॉज और ईशा लॉज ने मिलकर ‘ब्लावात्स्की बंगल’ में एक बड़े सहयोगी संगोष्ठी (सिम्पोजियम) का आयोजन किया। वक्ता श्री शिखर अग्निहोत्री और श्री विनय कुमार पात्री ने अपनी सीरीज “द पावर ऑफ थॉट-फ्रॉम केओस टू विविड क्रिएशन” (सोच की शक्ति-अराजकता से जीवंत रचना तक) का दूसरा भाग प्रस्तुत किया। यह मुख्य कार्यक्रम फरवरी के पिछले सत्र को आगे बढ़ाते हुए, मानसिक स्तर के गूढ़ सिद्धांतों को रोजमर्रा की जिंदगी के लिए एक व्यावहारिक गाइड में बदलने पर केंद्रित था। प्रस्तुतकर्ताओं ने विस्तार से बताया कि कैसे भावनात्मक और मानसिक उथल-पुथल के “भंवर” को स्थिर और रचनात्मक विचारों में बदला जा सकता है—

उन्होंने सदस्यों को आंतरिक प्रशिक्षण और आत्म-नियंत्रण का एक

व्यवस्थित तरीका भी बताया।

शुक्रवार, 8 मई 2026 को, दुनिया भर के थियोसोफिकल समुदाय ने अड्यार में हेडक्वार्टर हॉल में एक बड़ी सभा के साथ अपना सालाना ‘व्हाइट लोटस डे’ मनाया। मैडम ब्लावत्स्की के निधन की याद में आयोजित इस समारोह में उनकी स्पष्ट इच्छाओं का पालन करते हुए सर एडविन अर्नोल्ड की ‘द लाइट ऑफ एशिया’ और ‘भगवद गीता’ के साथ-साथ ‘द वॉयस ऑफ द साइलेंस’ के अंशों का पाठ किया गया। हालाँकि यह कार्यक्रम MTF द्वारा आयोजित नहीं किया गया था, फिर भी इसमें शामिल होने वाले और कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले ज्यादातर लोग MTF के पुराने सदस्य थे, जिनमें डॉ. रेवती और सुश्री गीता जयशंकर शामिल थीं।

MTF ने गांधी नगर लॉज के साथ मिलकर रविवार, 10 मई 2026 को अड्यार लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर (LRC) के कॉन्फ्रेंस हॉल में एक मीटिंग आयोजित की। MTF के प्रेसिडेंट सुकेश के परिचय के बाद, गेस्ट स्पीकर जोमा सिपे ने “अड्यार में कला का पुनर्जागरण-उपासिका” (The Renaissance of Art at Adyar—UPASIKA) विषय पर प्रस्तुति दी। इस सेशन में TS की कलात्मक विरासत पर चर्चा की गई और ऐतिहासिक कला को आंतरिक बदलाव के कठोर और व्यवस्थित तरीके से जोड़ा गया। सत्र का समापन MTF के सेक्रेटरी संजय संपत के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। इसमें TS के प्रेसिडेंट टिम बॉयड और TS के वाइस-प्रेसिडेंट शिखर अग्निहोत्री समेत 40 से ज्यादा लोग और कई गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

यू0पी और उत्तराखंड

बन्धु बी के पांडे ने 3 मई को लखनऊ के धर्म लॉज में ‘लाइट ऑन द पाथ’ (Light on the Path) विषय पर भाषण दिया। इसके बाद, उन्होंने 13 और 20 मई को दो सत्रों में ‘गॉड एंड गॉड्स’ (God and Gods) विषय पर बात की। बन्धु एच.बी. पांडे का ‘स्पिरिटुअल जर्नी’ (Spiritual Journey) पर भाषण भी उसी जगह पर 27 मई को हुआ।

बन्धु एच.बी. पांडे ने 7 मई को आगरा के निर्वाण लॉज की एक मीटिंग में ‘कर्म योग’ के बारे में बताया। महीने के बाकी तीन गुरुवार को वहाँ जो अन्य बातें हुईं, वे ‘प्रायश्चित’ (बन्धु हरीश शर्मा द्वारा), ‘योग’ (बन्धु राजीव ओझा द्वारा) और ‘शिव तत्व’ (बन्धु देवेन्द्र बाजपेयी द्वारा) विषयों पर थीं।

बन्धु ए.पी. श्रीवास्तव ने 6 मई को गोरखपुर के सर्वहितकारी लॉज में

‘बुद्ध की शिक्षाओं’ के बारे में बताया। बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 20 मई को ‘थियोसोफी में एच.पी.बी. के योगदान’ पर बात की और 27 मई को बन्धु अजय राय ने ‘बिना क्रूरता के सुंदरता’ (Beauty without Cruelty) विषय पर चर्चा की। इसके अलावा, बन्धु अजय राय ने 10 मई को सनातन धर्म लॉज में ‘बुद्ध तत्व’ पर बात की।

बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा का ‘कर्म का सिद्धांत’ (Law of Karm) पर भाषण – भाग 1 पर 23 मई को महेश्वर ब्रह्मविद्या लॉज में हुआ, और फिर उन्होंने इसी विषय पर ब्रह्मविद्या लॉज, जगदीशपुर (गोरखपुर जिला) में 31 मई को भाषण दिया। इसके अलावा, बन्धु मिश्रा ने ‘कर्म के सिद्धांत’ पर ऑनलाइन भाषण भी दिए, जो सत्य दर्शन लॉज, जोगिया के तत्वावधान में तीन सत्रों में क्रमशः 3, 10 और 23 मई को आयोजित किए गए थे।

बन्धु शेष नाथ त्रिपाठी का ‘भगवद गीता’ के अध्याय-16 पर भाषण 28 मई को ब्रह्मविद्या लॉज, जिग्ना भियांव (गोरखपुर जिला) द्वारा आयोजित किया गया था।

बन्धु विश्वंभर द्विवेदी ने 10 मई को ब्रह्मविद्या लॉज, जगदीशपुर (गोरखपुर जिला) की बैठक में ‘योग विज्ञान’ (The Science of Yoga) के बारे में बात की।

बन्धु कमलाकर मिश्रा का ‘आध्यात्मिकता के माध्यम से विकास’ (Growth through Spirituality) पर भाषण 11 मई को लक्ष्मी नारायण लॉज, बासपुर (गाजीपुर जिला) में आयोजित किया गया था।

बन्धु श्रीकांत मणि त्रिपाठी और एस. बी. आर. मिश्रा ने 31 मई को देवरिया के गोरखनाथ ब्रह्म विद्या लॉज में आयोजित बैठक में संयुक्त रूप से ‘कर्म का सिद्धांत’ (Law of Karm) – भाग 1 के बारे में बताया।

बन्धु हरिद्वार शुक्ला और बन्धु रविनाथ शुक्ला ने ‘कर्म योग’ विषय पर 14 मई को श्री समवेद ब्रह्म विद्या संस्थान, तामेश्वर नाथ, देवरिया (जिला संत कबीर नगर) में चर्चा की।

बन्धु महेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने मिर्जापुर के नारायण लॉज में ‘द की टू थियोसोफी’ (The Key to Theosophy) किताब के 9वें अध्याय का 10 मई को अध्ययन कराया। इसके अलावा, उन्होंने ‘विश्व-बंधुत्व’ और ‘निर्वाण’ (दो सत्रों में) अध्यायों का भी अध्ययन कराया। ‘थियोसोफी के पाठ’ किताब के इन दो अध्यायों का अध्ययन क्रमशः 17, 24 और 30 मई को हुआ।

बन्धु एस.के. पांडे ने मई महीने में हर रविवार को कानपुर के चोहान लॉज में ‘लाइट ऑन द पाथ’ किताब पर ग्रुप स्टडी करवाई।

बन्धु जे.एन. तिवारी ने 3 मई को प्रयागराज के आनंद लॉज में ‘मौत के करीब’ (Approaching to Death) विषय पर बात की।

बहन सुषमा श्रीवास्तव ने 15 मई को प्रयागराज के महिला धर्म लॉज में एक लेक्चर दिया, जिसमें उन्होंने ‘मनुष्य के सात शरीर और उनके कार्य’ के बारे में बताया।

बन्धु धीरेन बनर्जी ने 10 मई को ग्रेटर नोएडा के मैत्रेय लॉज में ‘चक्र’ विषय पर बात की। उसी जगह पर 24 मई को बहन मधु गर्ग ने ‘मनुष्य के सात शरीर’ विषय पर बात की।

बहन सुब्रालिना मोहंती ने 3 और 10 मई को गाजियाबाद के प्रयास लॉज में ‘एट द फीट ऑफ द मास्टर’ किताब का अध्ययन कराया। 24 मई को बहन स्मिताप्रज्ञा पात्रो ने वहाँ ‘युवाओं की चुनौतियाँ और थियोसोफिकल समाधान’ विषय पर एक भाषण दिया।

16 मई को वाराणसी के एनी बेसेंट लॉज में जेम्स एस. पकिन्स की किताब ‘अ ज्योमेट्री ऑफ स्पेस एंड कॉन्शियसनेस’ से ‘ऑर्बिट ऑफ ह्यूमन कॉन्शियसनेस’ विषय पर अध्ययन और चर्चा हुई। 9 और 23 मई को सीतापुर में सीतापुर लॉज और अरुंदेल लॉज ने मिलकर लेख पढ़ने और चर्चा करने के कार्यक्रम आयोजित किए। बहन रागिनी रत्ना ने ‘भगवद्गीता’ का 10वां अध्याय और ‘आत्म-नियंत्रण और चरित्र निर्माण’ विषय पढ़ा। फिर, 30 मई को बन्धु हर्षित श्रीवास्तव ने ‘गंधर्व और देव’ विषय पढ़ा।

8 मई को लखनऊ के तीन लॉज और आगरा, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, प्रयागराज और सीतापुर के लॉज ने ‘व्हाइट लोटस डे’ मनाया।

अन्य फेडरेशनों में योगदान:

बहन सुब्रालिना मोहंती ने 19 से 23 मई तक ‘एट द फीट ऑफ द मास्टर’ किताब का अध्ययन कराया। यह अध्ययन शिविर उत्कल फेडरेशन की देखरेख में भुवानी में आयोजित किया गया था।

इंडियन सेक्शन प्रोग्राम में योगदान: बन्धु एस.के. पांडे ने ‘भगवान बुद्ध और उनकी मुख्य शिक्षाएं’ विषय पर एक ऑनलाइन बातचीत की। यह 1 मई को आयोजित किया गया था।

बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा की 'कर्म का नियम' पर दो बार बातचीत 3 और 10 मई को हुई।

बहन विभा सक्सेना (दो अन्य वक्ताओं के साथ) ने 8 मई को 'व्हाइट लोटस डे के महत्व' पर बात की।

बहन अर्चना पांडे का 'अदृश्य दुनिया' (Invisible World) पर भाषण दो सत्रों (17 और 24 मई) में आयोजित किया गया।

भुवाली में TOS का नेशनल कैंप

थियोसोफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस ने 4 से 6 जून 2026 तक **भुवाली** में समर नेशनल कैंप आयोजित किया। इस कैंप में पूरे भारत से 45 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कुमाऊं हिल स्टेशन का मौसम सुहावना और ठंडा था, जिससे सभी प्रतिनिधियों को पहाड़ों के नजारों का शानदार अनुभव मिला और वे खुश हुए। कैंप का विषय "प्रकृति और थियोसोफी" था। सभी ने बातचीत और पावर-पॉइंट प्रेजेंटेशन की सराहना की। भारत के सभी क्षेत्रों में TOS की गतिविधियों की समीक्षा की गई और नई चुनौतियों को देखते हुए भविष्य की दिशा पर चर्चा की गई। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर हिमालयन स्टडी सेंटर (इंडियन सेक्शन) के कैंपस में ओक (Oak) के पेड़ लगाए गए और हमारे सामने मौजूद पर्यावरणीय चुनौतियों पर अच्छी चर्चा हुई। शाम को प्रतिनिधियों ने एक दिलचस्प सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया, जिसमें गायन और माउथ ऑर्गन पर बजाए गए गाने शामिल थे।

इंडियन सेक्शन हेडक्वार्टर

वाराणसी में इंडियन सेक्शन हेडक्वार्टर में 30 अक्टूबर से 1 नवंबर 2025 तक

"रोजमर्रा की जिंदगी के लिए प्राचीन हेलेनिक ज्ञान" पर एक स्टडी कैंप आयोजित किया गया।

थियोसोफिकल सोसाइटी इंडियन सेक्शन के निमंत्रण पर, ग्रीक सेक्शन की जनरल सेक्रेटरी एरिका जियोर्जियाडस ने 30 अक्टूबर से 1 नवंबर 2025 तक इंडियन सेक्शन हेडक्वार्टर में तीन दिन का स्टडी कैंप आयोजित करने के लिए भारत के वाराणसी का दौरा किया।

कैंप का विषय "रोजमर्रा की जिंदगी के लिए प्राचीन हेलेनिक ज्ञान" था, जिसमें आज की जिंदगी के लिए ऑर्फिक, पाइथागोरियन और

प्लेटोनिक परंपराओं की व्यावहारिक और आध्यात्मिक प्रासंगिकता को समझाया गया। रोजमर्रा की जिंदगी, आत्म-ज्ञान, चिंतन-मनन और चेतना में बदलाव के लिए प्लेटो की शिक्षाओं पर विशेष जोर दिया गया।

भारत के अलग-अलग हिस्सों से आए लोगों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में दार्शनिक चिंतन, सोच-विचार वाली बातचीत और शांत ध्यान के सत्र शामिल थे। इन सत्रों में प्लेटो की 'गुफा की रूपक कथा' (Allegory of the Cave), डेल्फी का संदेश "खुद को जाना" (Know Thyself), पवित्र याद (Anamnesi), चिंतनशील दृष्टि (Theasis) और प्रकृति व रोजमर्रा की जिंदगी के जरिए ज्ञान को फिर से खोजने जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

इस प्रोग्राम में ये सेशन शामिल थे:

प्लेटो की गुफा – अंधेरे से रोशनी की ओर

आत्मा की नजरों से दुनिया को देखना

रोशनी की ओर मुड़ना

आत्म-ज्ञान और जीने की कला

रोजमर्रा की जिंदगी के लिए प्राचीन यूनानी ज्ञान

ऑर्फिक और प्लेटोनिक परंपराओं में ईश्वरीय स्मरण

ईश्वरीय स्मरण की प्राचीन यूनानी पद्धतियां

क्या रोजमर्रा की जिंदगी में चिंतनशील दृष्टि की अवस्था में जीना संभव है?

वाराणसी में अपने प्रवास के दौरान, बहन एरिका जियोर्जियाडस ने थियोसोफिकल सोसाइटी में राधा बर्नियर के लंबे समय से चले आ रहे आध्यात्मिक और दार्शनिक योगदान का सम्मान करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि भी दी। प्रेसिडेंट बन्धु प्रदीप एच. गोहिल ने सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए स्टडी कैंप का समापन किया।

यह दौरा थियोसोफिकल सोसाइटी के इंडियन सेक्शन के प्रेसिडेंट पद के लिए हो रहे चुनावों के समय हुआ।

एरिका जियोर्जियाडस ने ग्रीक सेक्शन और उसके सदस्यों की ओर से, बन्धु प्रदीप एच. गोहिल को उनके दोबारा चुने जाने पर बधाई दी और थियोसोफिकल सोसाइटी के लिए उनके महत्वपूर्ण काम को जारी रखने में

उन्हें समझदारी, शक्ति और सफलता की कामना की।

थियोसोफिकल और दार्शनिक महत्व के अलावा, इस स्टडी कैंप ने दुनिया की दो सबसे पुरानी सभ्यताओं—ग्रीस (Greece) और भारत—के बीच आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत करने का काम भी किया। इन दोनों सभ्यताओं ने सदियों से ज्ञान, चिंतन, आत्म-ज्ञान और ईश्वरीय सत्य की खोज के गहरे रास्ते दिखाए हैं। भाईचारे और साझा दार्शनिक व आध्यात्मिक विरासत की इस भावना के साथ, यह आयोजन हेलेनिक और भारतीय परंपराओं के बीच एक जीवंत सेतु बन गया जिसने थियोसोफिकल आंदोलन के मूल में मौजूद सार्वभौमिक भाईचारे के शाश्वत आदर्श को फिर से स्थापित किया।

व्हाइट लोटस डे

इंडियन सेक्शन और काशी तत्त्व सभा (KTS) ने मिलकर 8 मई को इंडियन सेक्शन के हेडक्वार्टर में एनी बेसेंट हॉल में व्हाइट लोटस डे मनाने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत वसंत कन्या इंटर कॉलेज के छात्रों द्वारा सभी धर्मों की प्रार्थनाओं और यूनिवर्सल प्रेयर (सार्वभौमिक प्रार्थना) के साथ हुई। डॉ. बीना सिंह, श्रीमती भारती चट्टोपाध्याय और श्रीमती उमा भट्टाचार्य ने क्रमशः 'द वॉयस ऑफ द साइलेंस' 'द लाइट ऑफ एशिया' और 'भगवद गीता' जैसी किताबों के अंश पढ़कर सुनाए।

इस मौके पर डॉ. आभा श्रीवास्तव ने 'ब्लावत्स्की और प्रैक्टिकल ऑकल्टिज्म' (व्यावहारिक गूढ़ विद्या) पर बात की और कहा कि एच. पी. बी. ने इसे 'प्राचीन ज्ञान' या 'ज्ञान धर्म' (wisdom religions) कहा था। यह छिपा हुआ तो है, लेकिन वर्जित नहीं है। यह एक यूनिवर्सल साइंस है जो सभी धर्मों, दर्शन और विज्ञान का आधार है। यह कोई आत्माओं से संपर्क करने की चालें या भूत-प्रेत की खोज नहीं थी। उन्होंने कहा कि असली गूढ़ विद्या आत्म-अनुशासन है, न कि मीडियमशिप (आत्माओं का माध्यम बनना), और यह भी कहा कि इंसान सिर्फ शरीर और आत्मा नहीं है। एच. पी. बी. ने सात सिद्धांतों—भौतिक शरीर, सूक्ष्म शरीर (triple), जीवन शक्ति, पशु आत्मा, मानवीय आत्मा, आध्यात्मिक आत्मा और 'आत्मा'—की पहचान की और बताया कि हर एक पर महारत हासिल करना जरूरी है। एच पी बी ने सच्चे 'ऑकल्टिज्म' (गुप्त विद्या) और 'ऑकल्ट आर्ट्स' या जादू के बीच फर्क बताया उन्होंने इसे "जीवन का विज्ञान और जीने की कला" कहा, जिसके लिए त्याग, वैराग्य और इंद्रियों से परे आंतरिक क्षमताओं के विकास की

जरूरत होती है। 'प्रैक्टिकल ऑकल्टिज्म' में उन्होंने जो नियम बताए, वे थे: कोई स्वार्थी मकसद न रखना, पूरी तरह मानसिक और शारीरिक पवित्रता, बिना शर्त आत्म-त्याग और गुरुओं (मास्टर्स) की पूरी आज्ञा मानना। "ऑकल्टिस्ट वह है जो जानता है, हिम्मत करता है, इच्छाशक्ति रखता है और चुप रहता है।" वह 19वीं सदी में ज्ञान का प्रकाश लाने वाली एक सच्ची मार्गदर्शक थीं।

KTS की प्रेसिडेंट डॉ. कुमुद रंजन ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया। इसके बाद, सदस्यों और मेहमानों ने एच. पी. बी. की तस्वीर पर फूल चढ़ाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

इंडियन सेक्शन को मिले दान

1-4-2025 से 31-3-2026 के बीच

सामान्य दान	(रुपये में)
श्री सत्यवीर त्यागी, दिल्ली	1,020
श्रीमती अरुण भाटिया	1,200
श्री जे.के. खन्ना, नोएडा	1,100
इंडियन सेक्शन संग्रह (Corpus)	
श्रीमती मंजू सुंदरम	8,400

द इंडियन थियोसोफिस्ट
ओनरशिप और अन्य विवरणों के बारे में जानकारी
फॉर्म IV
(नियम 8 देखें)

- 1) प्रकाशन का स्थान : द इंडियन सेक्शन
थियोसोफिकल सोसाइटी
कामाछा, वाराणसी-221 010
- 2) प्रकाशन की आवृत्ति : मासिक
- 3) प्रिंटर का नाम : रवि प्रकाश पांड्या
(क्या भारत के नागरिक हैं) : हाँ
(यदि विदेशी हैं, तो
मूल देश का नाम बताएं) : X
पता : रेनबो प्रिंटर्स
सिद्धगिरिबाग, वाराणसी
- 4) प्रकाशक का नाम : प्रदीप एच. गोहिल
(क्या भारत के नागरिक हैं) : हाँ
(यदि विदेशी हैं, तो
मूल देश का नाम बताएं) : X
पता : द इंडियन सेक्शन
द थियोसोफिकल सोसाइटी
कामाछा, वाराणसी- 221 010
- 5) एडिटर का नाम : प्रदीप एच. गोहिल
(क्या भारत के नागरिक हैं) : हाँ
(अगर विदेशी हैं, तो मूल देश का नाम बताएं)
पता : द इंडियन सेक्शन
द थियोसोफिकल सोसाइटी
कामाछा, वाराणसी- 221 010
- 6) सोसाइटी के मालिक व्यक्तियों
और पार्टनर या शेयरधारकों का
नाम और पता : द इंडियन सेक्शन, द थियोसोफिकल
सोसाइटी कामाछा, वाराणसी- 221 010
(कुल पूंजी का एक प्रतिशत से
ज्यादा हिस्सा रखने वाले)

मैं, प्रदीप एच. गोहिल, इसके जरिए घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई जानकारी मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।

दिनांक :- 1 अप्रैल 2026

प्रदीप एच गोहिल
प्रकाशक के हस्ताक्षर